कोमल है।

मालती का चरित्र

मालती गोदान का एक गतिशील नारी चरित्र है। प्रारम्भ में वह चंचल तितली की भांति दिखाई देती है किन्तु बाद में प्रो. मेहता के सम्पर्क में आकर सेवा और त्याग को अपने जीवन का आदर्श बना लेती है। मालती शिक्षित नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली आधुनिक नारी का प्रतीक है। वह इंग्लैण्ड से डॉक्टरी पढ़कर आयी है और नवयुग की साक्षात् प्रतिमा है। ताल्लुकेदारों के महलों में उसका प्रवेश अधिक है, गरीबों में कम। प्रेमचंद ने मालती का परिचय इन शब्दों में दिया है, **"आप नवयुग की साक्षात् प्रतिमा हैं। गात कोमल, पर चपलता कूट-कूटकर भरी हुई। झिझक या संकोच का कहीं नाम नहीं, मेकअप में प्रवीण, बला की हाजिरजवाब, पुरुष मनोविज्ञान की अच्छी जानकार, आमोद-प्रमोद**

को जीवन का तत्व समझने वाली, लुभाने और रिझाने की कला में निपुण। जहां आत्मा का स्थान है वहां प्रदर्शन, जहां हृदय का स्थान है वहां हाव-भाव, मनोद्गारों पर कठोर निग्रह, जिसमें इच्छा या अभिलाषा का लोप सा हो गया।''

मालती केवल सुंदर ही नहीं है, बुद्धिमती भी है। उसके तर्क अकाट्य होते हैं। रायसाहब के आयोजन में जब बिजली पत्र के सम्पादक पण्डित ओंकारनाथ सिद्धान्तों की दुहाई देते हैं, तब वह उन्हें यह कहकर निरुत्तर कर देती है, **''तो आपके पत्र में विदेशी वस्तुओं के विज्ञापन क्यों होते हैं? मैंने किसी भी पत्र में इतने विदेशी विज्ञापन नहीं देखे।''**

उद्योगपति खन्ना साहब मालती के प्रति आकर्षित हैं। वे उसकी रूप की दीपशिखा पर पतंगे की भांति जलने को आतुर हैं किन्तु वह चरित्रहीन नहीं है और उन्हें साफ-साफ बता देती है कि धन ने आज तक किसी नारी के हृदय पर विजय नहीं पायी और न कभी पायेगा। वह प्रोफेसर मेहता के प्रति आकृष्ट है। मेहता के सम्पर्क में आने के बाद उसका चारित्र दूसरी दिशा की ओर मुड़ता है और वह अपने चरित्र में आमूल-चूल परिवर्तन कर सेवा एवं त्याग की ऐसी देवी बन जाती है कि अब मेहता उसके प्रति आकृष्ट हैं किन्तु वह उनके विवाह प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करती।

मालती के पिता अपाहिज हैं। उसकी दो छोटी बहनें हैं, सरोज और वरदा। परिवार के भरण-पोषण का उत्तरदायित्व मालती पर है। पिता की आदतें बिगड़े रईसों जैसी हैं, वे शराब-कबाव के शौकीन हैं। मालती पिता के अपव्यय पर झुंझलाती है पर परिवार में रहकर सब सहन करती है। छोटी बहनों—'सरोज' एवं 'वरदा' की शिक्षा-दीक्षा का भार भी उसी के कंधों पर है। पारिवारिक दायित्वों का पालन वह बड़ी कु

कर सेवा एवं त्याग की ऐसी देवी बन जाती है कि अच मेहता उसके प्रति आकृष्ट हैं किन्तु वह उनके विवाह प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करती।

मालती के पिता अपाहिज हैं। उसकी दो छोटी बहनें हैं, सरोज और वरदा। परिवार के भरण-पोषण का उत्तरदायित्व मालती पर है। पिता की आदतें बिगड़े रईसों जैसी हैं, वे शराब-कबाव के शौकीन हैं। मालती पिता के अपव्यय पर झुंझलाती है पर परिवार में रहकर सब सहन करती है। छोटी बहनों—'सरोज' एवं 'वरदा' की शिक्षा-दीक्षा का भार भी उसी के कंधों पर है। पारिवारिक दायित्वों का पालन वह बड़ी कुशलता से करती है।

प्रेमचंद ने स्वयं मालती के चरित्र का विश्लेषण करते हुए लिखा है, **"मालती बाहर से तितली है, भीतर से मधुमक्खी। उसके जीवन में हँसी ही हँसी नहीं है, केवल गुड़ खाकर कौन जी सकता है। ..... उसका चहकना और चमकना इसलिए नहीं है कि वह चहकने को ही जीवन समझती है .....नहीं, वह इसलिए चहकती है और विनोद करती है कि इससे उसके कर्तव्य का भार कुछ हल्का हो जाता है।"**

मालती के चरित्र के तीन रूप 'गोदान' में हैं—तितली रूप, मानवी रूप एवं देवी रूप। एक तितली के रूप में वह पाश्चात्य रंग में रँगी हुई दिखाई देती है। पुरुषों की मण्डली में चहकती है, मनोरंजन एवं विलास को जीवन समझती है, अपने चारों ओर रसिक पुरुषों का जमघट लगाये रहती है। वह शराब भी पीती है तथा दूसरों को शराब पिलाने के लिए अपने रूप का जादू भी प्रयोग में लाती है।

प्रोफेसर मेहता के सम्पर्क में आकर उसका तितलीपन दूर हो रहा है अब वह मधु संचित करने वाली मधुमक्खी बनती जा रही है। मेहता के प्रति वह इतनी आकृष्ट है कि अपने और मेहता के बीच किसी तीसरे की उपस्थिति को सहन नहीं कर पाती। जब शिकार पार्टी में वह मेहता के साथ जाती है तब जंगली युवती की मेहता द्वारा प्रशंसा करने पर वह जल-भुन जाती है और उस युवती को कलूटी, असभ्य कहकर अपनी ईर्ष्या व्यक्त करती है। मेहता को वह 'छिछोरा' तक कह देती है। वस्तुतः वह मेहता से प्रेम करती है, इसलिए उस जंगली युवती को सहन नहीं कर पाती।

मालती में 'आत्मालोचन' का गुण भी विद्यमान है। रायसाहब के यहां जब धूर्त खन्ना और आडम्बर प्रिय रायसाहब उसे चुनाव में खड़ा होने के लिए कहते हैं तो वह साफ कहती है कि एक बार जेल जाने के सिवा मैने और क्या जन सेवा की है। इसी प्रकार मेहता जब उसे त्याग की देवी कहते हैं तो वह कहती है, **"मैं और त्याग! मैं तुमसे सच कहती हूं, सेवा या त्याग का भाव कभी मेरे मन में नहीं आया।"**

मेहता के सम्पर्क में आने के बाद मालती के चरित्र में बदलाव दिखाई देता है। वह ग्रामीणों की सेवा में पूरी तरह अपने को डुबा देती है। अब उसे लगता है कि, **"इस त्यागमय जीवन के सामने वह विलासी जीवन कितना तुच्छ, बनावटी था। आज उसके वह रेशमी कपड़े जिन पर जरी का काम था और सुगन्ध से महकता शरीर और वह पाउडर से अलंकृत मुखमण्डल उसे लज्जित करने लगा।"**

अब मेहता उसकी ओर आकर्षित हैं और वह उससे विवाह करने के इच्छुक हैं परन्तु वह उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करती। अपने इस देवी रूप में मेहता का आदर्श चरित्र

मेहता के सम्पर्क में आने के बा बदलाव दिखाई देता है। वह ग्रामीणों की सेवा में पूरी तरह अपने को डुबा देती है। अब उसे लगता है कि, **"इस त्यागमय जीवन के सामने वह विलासी जीवन कितना तुच्छ, बनावटी था। आज उसके वह रेशमी कपड़े जिन पर जरी का काम था और सुगन्ध से महकता शरीर और वह पाउडर से अलंकृत मुखमण्डल उसे लज्जित करने लगा।"**

अब मेहता उसकी ओर आकर्षित हैं और वह उससे विवाह करने के इच्छुक हैं परन्तु वह उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करती। अपने इस देवी रूप में मेहता का आदर्श चरित्र भी वह बौना सिद्ध कर देती है। प्रेमचंद ने विलासिनी मालती को मानवता के उच्च शिखर पर पहुंचा दिया, जहां पहुंचकर वह संसार के अन्याय, आतंक, भय, अंधविश्वास एवं कष्ट के निवारण में अपने को उत्सर्ग कर देती है। मालती का हृदय परिवर्तन एवं चारित्रिक विकास एक दिन में या अनायास नहीं हुआ अपितु उसके चरित्र का यह विकास धीरे-धीरे एवं उत्तरोत्तर हुआ है इसलिए विश्वसनीय लगता है। **डॉ. गोपाल राय** मालती के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं, **"प्रेमचंद चाहते थे कि भारत की शिक्षित स्त्रियां पारिवारिक बंधन में न पड़कर पुरुषों को देश सेवा के लिए प्रेरणा दें और स्वयं भी मैदान में आकर समाज की सेवा करें। मालती उनकी इस आकांक्षा को रूपायित करती है।"**

मालती प्रेमचंद द्वारा गढ़ा गया एक प्रभावशाली नारी चरित्र है। यह एक गत्यात्मक चरित्र है तथा प्रेमचंद ने उसे यथार्थ से आदर्श की ओर उन्मुख किया है।